श्रीराधानन्दकुमार ॥

॥ नाटक ॥

॥ स्थान रङ्गशाला ॥

[नान्दी आता है]

(छप्पै)

जय राधानँदनन्द, जयति कालिन्दी पावन। जय गोधन वन कुञ्ज, जयति द्रुमलता सुहावन॥ जय वृज गोपी गोप, जयति वंशीवट भावन। जय वृन्दावन मंजु, नित्य लीला दरसावन॥ जय जयति जयति शोभा विमल, जुगल रूप मंगल करन। जय जयति जयति कल्याणकर, चरण शरण राधारमन॥१॥

(सूत्रधार आताहै)

सू० ।-(इधर उधर देखकर) ठैरो। (आप ही आप) अहा! प्रेम भी क्या ही अमूल्य पदार्थ है कि जिस्के ग्राहक विरले ही जन दृष्टि पड़ते हैं आज इस रङ्गशाला में इतने सुहृद रसिक एकत्र